AIRO JOURNALS

Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International

ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:1
October 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

अश्क के उपन्यासों में पंजाब के शहरी मध्यवर्ग की चेतना

नीति खरे
सहायक प्रोफेसर रूंगटा कॉलेज दुर्ग

DECLARATION:: I AS AN AUTHOR OF THIS PAPER / ARTICLE, HEREBY DECLARE THAT THE PAPER SUBMITTED BY ME FOR PUBLICATION IN THIS JOURNAL IS COMPLETELY MY OWN PREPARED PAPER.. I HAVE CHECKED MY PAPER THROUGH MY GUIDE/SUPERVISOR/EXPERT AND IF ANY ISSUE REGARDING COPYRIGHT/PATENT/ PLAGIARISM/ OTHER REAL AUTHOR ARISE, THE PUBLISHER WILL NOT BE LEGALLY RESPONSIBLE. . IF ANY OF SUCH MATTERS OCCUR PUBLISHER MAY REMOVE MY CONTENT FROM THE JOURNAL.

सार

इस संदर्भ में अश्क–साहित्य को समझने के लिए इनके जीवन एवं व्यक्तित्व पर विचार करना समीचीन होगा। क्योंकि जीवन और साहित्य का अभिन्न सम्बन्ध है। साहित्य जीवन की व्याख्या करता है। साहित्यकार का जैसा जीवन होगा उसका वैसा ही साहित्य होगा। कोई भी साहित्यकार कितना ही सचेत क्यों न हो, लेकिन जब वह किसी रचना का निर्माण करता है, तो वह उस रचना में स्वयं के प्रवेश को रोक नहीं पाता है। कोई भी साहित्यकार कितना ही तटस्थ क्यो न हो, फिर भी उसके जीवन के कुछ न कुछ तत्त्व तो उसके साहित्य में स्वयंमेव प्रविष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार उसकी रचना में उसका व्यक्तित्व घुला–मिला रहता है। अतः साहित्य के मूल की जानकारी हासिल करने के लिए साहित्यकार के जीवन व व्यक्तित्व को जानना भी अति आवश्यक है

कीवर्डरू *अश्क' युग, मध्यवर्गीय*

परिचय

अश्क' का युग

अश्क हिन्दी के अग्रगण्य साहित्यकारों में हैं। साहित्य की विभिन्न विधाओं पर सफलतापूर्वक इनकी कलम चली है। कुछ लोगों की दृष्टि में तो "इस समय हिन्दी के श्रेष्ठतम उपन्यासकारों तथा एकांकी और कहानी–लेखकों में उनकी गिनती है।१ इतना बड़ा साहित्यकार होने पर भी अश्क एक खुली हुई किताब है जिन्हें कोई भी पढ़ सकता है। इस तथ्य को इन्होंने स्वयं भी स्वीकार किया है, ष्बात किंचित व्यक्तिगत है पर, मैं खुला आदमी हूँ। काफी खुली जिन्दगी जीता हूँ, बुरी तो, भली तो मेरी सभी बाते प्रायः लोग जानते हैं।१२ आज की आलोचना में कृति के सम्यक् विश्लेषण के लिए कृतिकार के जीवन को जानना आवश्यक होता है, कृतिकार अपने जीवन और परिवेश को अपनी कृतियों में प्रक्षेपित करता है। वैसे टी. एस. इलियट आत्म की अभिव्यक्ति को नहीं वरन् आत्म से मुक्ति को ही कला मानता है। किन्तु प्रेमचन्द जैसे यथार्थधर्मी

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:1
October 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

कलाकार अपनी रुचि–अरुचि से निस्संग नहीं हो सके हैं। अश्क भी अपने अपने उपन्यासों में परिवेश तथा जीवन से अलग नहीं हो पाते हैं, अश्क ने स्पष्ट शब्दों में लिखा है, "मैं जिस निम्न–मध्यम–वर्ग में पैदा हुआ, पला और बढ़ा और उसी वर्ग का चरित्र–चित्रण मैंने अपनी कृतियों में अधिकांशतः किया है, बिना किसी व्यक्ति अथवा वर्ग का पूरा ज्ञान प्राप्त किए, साहित्य–सर्जना मेरे ख्याल में बददयानती है। लेखक जहाँ है, जिस वर्ग में है, जिस प्रदेश में है, जिसका पूरा ज्ञान उसे प्राप्त है, उसी वर्ग, समाज और प्रदेश को जन–कल्याण और जन–सुख के हेतु उसे अपने साहित्य में चित्रित करना चाहिए ऐसी मेरी धारणा है।[8]

साहित्य को प्रभावित करने वाला महत्त्वपूर्ण तत्त्व है – युगीन परिवेश। कोई भी रचनाधर्मी तत्कालीन युगीन परिवेश से प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता है। यह परिवेश उसके व्यक्तित्व को तो प्रभावित करता ही है, साथ ही उसकी रचना में भी समाविष्ट होता है। क्योंकि रचनाकार जिस भी विषय पर अपनी लेखनी चलाता है, वह उसे अपने समाज अथवा वातावरण में घटित होते हुए देखता है। इसी घटना को अपनी रचना का आधार बनाकर कल्पना का समावेश करके रचना का निर्माण करता है। दूसरे, रचनाकार का परिवेश पहले की भाँति छोटा नहीं रहा, वरन वह अब और विशाल हो गया है। विज्ञान ने दुनिया को छोटा बना दिया है। अब किसी लेखक पर प्राचीनकाल की तरह एक छोटे जनपद, राज्य या देश का प्रभाव नहीं पड़ता; अब तो सारी दुनिया तथा अन्तरिक्ष का एक अंश भी उसके परिवेश का अंग है जो उसकी चेतना को प्रभावित करता है। दुनिया के किसी कोने में कोई घटना घटती है और रेडियो तथा अखबारों के द्वारा तुरन्त वह खबर चारों ओर फैल जाती है। इसी प्रकार काल का वर्तमान क्षण ही हमारा परिवेश नहीं है, हमारा सारा अतीत, बल्कि हमारी सारी परम्पराएँ हमारे वर्तमान पर छायी रहती है और इस प्रकार हमारे परिवेश का अंग बनती है

मध्यवर्गीय जीवन की अवतारणा – प्रारंभिक उपन्यास

पिछले ध्यायों में हमने विवेचन किया है कि मध्यवर्ग किसे कहते हैं और हिन्दी उपन्यासों में मध्यवर्ग का उदय किन परिस्थितियों में हुआ । मध्यवर्ग की बेबसी का चित्र भी एक थोडी सीमा तक अवतरित हुआ है । इस अध्याय में हम हिन्दी उपन्यासों में मध्यवर्ग के उदय और विकास का एक संक्षिप्त परिचय देने जा रहे हैं।

जैसे पिछने अध्याय में सूचित किया है कि मध्यवर्ग का अस्तित्व अपने आप में समाज की श्रेणीकरण की ओर संकेत करता है । मध्यवर्ग की परिभाषा देते हुए यह भी बताया गया है कि मध्यवर्ग, उच्चवर्ग और निम्नवर्ग के बीच का वर्ग है जो सामाजिक, ऐतिहासिक एवं आर्थाि बदलती परिस्थितियों का उपज है ।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:1
October 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

भारतीय मध्यवर्ग की परिभाषा देते हुए डा.बी.बी. मिश्र ने लिखा है षब्रिटीश राज के परवर्ती काल में जो मध्यवर्ग संबनित हुए, वे उपोग के विकास की देन न होकर माध्यमिक तथा उच्चतर शिक्षा की उपज थे । अतः मध्यवर्ग के अधिकांश बुद्धिजीवी हा – सिविल कर्मचारी, अन्य वेतन भोगी कर्मचारी तथा विषानुरागी पेशे के सदस्य ।' एक अन्य भारतीय विद्वान ना सिर अहमद खान के अनुसार मध्यवर्ग के जीवन का आधार, निम्न और उच्चववर्गों से भिन्न है । उनके अपने पूर्वाग्रह, रूचियाँ तथा अरुचियों, शिष्टाचार रीति–रिवाज़ और आचार विचार है । जिन्हें स्पष्ट न होते हुए स्पष्ट किया जा सकता है

जो भी हो, मध्यवर्ग अपना अलग अस्तित्व रखता है, बहुधा मध्यवर्ग का व्यक्ति जीवनयापन के लिए तडपता है, घुटन का अनुभव करता है । इसका उन्य भारतीय . साहित्य में ब्रिटीशों के आगमन के बाद हा हो, ऐसा नहीं है । जमीन्दारी प्रथा में भी मध्यवर्ग था, लेकिन उधर मध्यवर्ग का सीमा निर्धारण संभव नहीं था । मध्यवर्ग के कारिन्द, मुन्दगी ये भी जीवन में प्रतिदिन दो जून अन्न के लिए जमीन्दार के मुहताज़ थे । वे गरीबों का शोषण करते थे चाहे तरीका हभिन्न हुआ हो। जमीन्दार के कर उगाहने में अपना ही मतलब हम लेते थे । तथापि इस तरह के आसा मियों के परिवार सदा संकट का सामना करते थे

परंतु मध्यवर्ग का स्पष्ट आ विर्भाव अधोगिक कान्ति के बाद ही हुआ । वेतन भोगी कर्मचारी, मजदूर अपने मालिकों का अनुकरण करने के लिए लालायित थे । अतः उनका स्वत्व नष्ट होता जा रहा था । हिन्दी उपन्यासकारों में प्रेमचन्द में इस तरह के पात्र मिलते हैं । गबन के पात्र हो, गोदान के, सब तंग खोते हैं, उध्यवर्ग की द्वारा आयोजित प्रतारणाओं में पड़कर दुःसह जीवन बिताने को विवश हो जाते हैं । धन का अभाव, उसे प्राप्त करके अपने को बढा चढा दिखाने की लालमा, समाज के बीच में अपने अस्तित्व को बनाये रखने की अतिवांछा आदि से ग्रसित मध्यवर्ग पतन की कगार में यही विश्राम पाते दिखाते हैं ।

मध्यवर्ग के स्वस्य और सीमाओं का परीक्षण करने पर यह बात मालूम हो जाती है उसकी निस्सहायता का एक बड़ी हद तक वह स्वयं उत्तरदायी है । वह उध्यान । को देखकर, उसकी बराबरी करने के लिए अनुचित मार्ग का अवलंबन करता है । उसको यह देखना चाहिए कि निम्नवर्ग से हम बेहतर हैं । परंतु यह उच्चवर्ग की ओर बढ़ने के लिए किये जानेवाले कार्यकलाप, उसकी किसी प्रकीर मदद न देते । यह बेबसी भी है । आर के उल्लेख से यह देखा जा सकता है कि प्रत्येक समाज में मध्यवर्ग का अस्तित्व किसी न किसी रूप में रहता है । उसके सौदागर स्चेंट, आधुनिक व्यापारिक पों के मालिक और संचालक भी आते हैं ।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:1
October 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

उनके अलावा छोटे कामधंधों को संभालनेवाले मानेजर, निरीक्षक, तकनीकी कर्मचारी, स्कूली अध्यापक ये भी मध्यवर्ग के हैं । डा. बलजीतसिंह के अनुसार मध्यवर्ग में केवल नियोजक ही नहीं अपितु कई कार्यकर्ता होते हैं जिनमें कुछ स्वतंत्र अथवा आत्मनिर्भर काम करनेवाले, कुछ व्यापारी और ग्राहक, कुछ संपत्तिशाली और कुछ निधन होते हैं तथा कुष्ठ लोग भी ऐसे भी होते हैं

राजनीतिक परिस्थिति

पेन्द्रनाथ अश्क ने जन्म लेते ही जब आँखें खोली तो पूरा विश्व युद्ध की चपेट में था। अभी अश्क जी की आयु मात्र पाँच वर्ष थी कि तभी 1914 ई.में प्रथम विश्वयुद्ध हुआ जो सन् 1918 ई. तक चलता रहा। यद्यपि यह महायुद्ध भारत से दूर यूरोप में लड़ा जा रहा था, परन्तु भारत पर अंग्रेजों का साम्राज्य होने के कारण भारत उनका उपनिवेश था और इस उपनिवेश से धन और जन बल उस युद्ध में झोंका गया था। लोग इस युद्ध में स्वेच्छा से हिस्सा ले रहे थे ताकि उनको राजभक्ति का यश प्राप्त हो। पंजाब के लोगों ने इस युद्ध में ज्यादा हिस्सा लिया था, अतः निश्चित रूप से पंजाब के जन बल की ज्यादा हानि हुई थी। इस युद्ध में पंजाब आकर्षण का केन्द्र था। उस समय के समाचार–पत्र पंजाब के शहीदों की गाथाओं एवं चित्रों से भरे रहते थे। विश्वयुद्ध 1918 ई. में समाप्त हुआ जिसका दुष्परिणाम यह निकला कि खाने की चीजों का अकाल सा पड़ गया और प्रत्येक चीज मंहगी हो गई। बड़ी संख्या में सैनिक अपंग हुए और मारे गए जिसकी वजह से अनेक परिवारों में विशेषकर पंजाब में उपार्जन करने वालों की संख्या कम हो गई। जिससे चारों तरफ त्राहि–त्राहि मच उठी जिसका प्रभाव बालक अश्क पर भी पड़ा।

1918 ई. में अंग्रेज विश्वयुद्ध जीत गए, परन्तु जीतने के बाद भी उन्होंने भारत को आजाद नहीं किया, जिसके विरोध में जलसे, जुलूस, धरनों का आयोजन होने लगा। अंग्रेजों ने विरोध को दबाने के लिए श्जलियाँवाला बागश में हत्याकाण्ड किया। जलियाँवाला बाग के हत्याकाण्ड को देखकर पूरा समाज कराह उठा। इस हत्याकाण्ड के विरोध में गाँधी जी ने श्खिलाफत आन्दोलनश का सूत्रपात किया। ष्गाँधी जी का सहयोग पाकर खिलाफत आन्दोलन जोरों पर भड़क उठा। जुलाई 1920 ई. में सिंध में खिलाफत अधिवेशन हुआ जिसमें गान्धी जी ने भी भाग लिया। उन्होंने तेईस करोड़ हिन्दुओं को अपने सात करोड़ मुसलमान भाइयों का साथ देने और सरकार का सहयोग न करने का आह्वान किया। इसके साथ ही वकीलों को सरकारी कचहरियों और विद्यार्थियों और शिक्षकों को सरकारी स्कूलों और कॉलेजों का त्याग करने का आह्वान किया गया। एसेम्बली और प्रान्तीय कौंसिलों के चुनावों का बहिष्कार, सरकारी पदवियों और सम्मानों का त्याग तथा सरकारी समारोहों का बहिष्कार, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार और स्वदेशी वस्तुओं,

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:1
October 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

विशेषकर खद्दर का प्रचार, शराबबन्दी आदि का कार्यक्रम जोरों से चल पड़ा।[९] यद्यपि यह शस्त्रहीन क्रान्ति 1922 ई. में समाप्त करने की घोषणा की गई थी, परन्तु फिर भी सशस्त्र क्रान्तिकारियों और आतंकवादियों के गुप्त दल अंग्रेज सरकार से बदला लेने के लिए पंजाब और बंगाल में संगठित हो रहे थे। 26 जनवरी 1930 ई. को भारतीय नेताओं ने स्वाधीनता दिवस मनाया। उसी दिन देशभर में लोगों ने जगह–जगह इकट्ठा होकर अहिंसा, असहयोग, सविनय अवज्ञा, लगानबन्दी और पूर्ण स्वराज्य का व्रत लिया। 1930–31 ई. में गोलमेज कान्फ्रेंसों का दौर गुजरा, लेकिन इसका कोई भी ठोस परिणाम सामने नहीं आया। 1933 ई. में गाँधी जी ने हरिजन समस्या को लेकर आन्दोलन किया। सन् 1935 ई. में चुनाव हुए और जिसमें कांग्रेस को भारी विजय मिली। सन् 1939 ई. में एक बार फिर विश्वयुद्ध हुआ, जिसमें 6 वर्षों तक भारी धन और जन की हानि होती रही।

इस प्रकार उपेन्द्रनाथ अश्क का परिवेश आन्दोलनों, अंग्रेजी सरकार के दमनचक्रों, विश्वयुद्धों आदि से भरा हुआ था, जिसका प्रभाव उसके व्यक्तित्व पर पड़ा। उन्होंने इस भारतीय समाज की राजनीतिक उथल–पुथल को नजदीक से देखा और महसूस किया, जिसका उल्लेख उन्होंने अपने उपन्यासों में किया है।

सामाजिक परिस्थिति

साहित्य और समाज का अभिन्न सम्बन्ध है। समाज में घटित होने वाली प्रत्येक घटना का वर्णन साहित्य में वर्णित होता है। समाज की घटनाएँ या समाज में किसी भी प्रकार का होने वाला परिवर्तन व्यक्ति की विचारधारा को प्रभावित करता है। यही सामाजिक घटनाएँ, परिवर्तन ही रचनाकार की रचना के प्रेरणास्रोत होते हैं, जिससे वह किसी घटना को आधार बनाकर उसका जीवन्त चित्रण करता है तथा पूरे समाज को उसके अन्दर व्याप्त अच्छाइयों–बुराइयों से अवगत कराता है। "आधुनिक साहित्य की विभिन्न विधाओं में सामाजिक चेतना और युगबोध की सर्वाधिक सशक्त अभिव्यक्ति उपन्यास के माध्यम से हुई है। प्राचीनकाल में व्यक्ति जीवन की निष्ठाओं, सामाजिक जीवन के उदात्त संकल्पों, राष्ट्रीय जीवन के विकासशील चेतन–स्तरों और विश्वजनीन सांस्कृतिक आदर्शों की स्थापना का कार्य महाकाव्यों के माध्यम से व्यक्त होता था, किन्तु आज ये सभी कार्य उपन्यास की रचना द्वारा सम्पन्न होते हैं। इसलिए उपन्यास को गद्य–युग का महाकाव्य कहा गया। इस दृष्टि से उपन्यास के लिए सामाजिक वातावरण और भी आवश्यक तत्त्व बन गया।

उपेन्द्रनाथ अश्क के जन्म के समय सम्पूर्ण भारत पर अंग्रेजों का शासन था। भारतीय जनता अंग्रेजों से आजादी प्राप्त करने के लिए आन्दोलनों एवं हड़तालों में लीन थी। जिस प्रकार भारतीय राजनीति पूरी तरह से विशृंखलित थी, उसी प्रकार सामाजिक स्थिति भी अस्त–व्यस्त थी। अंग्रेजी राज्य के द्वारा डाक, रेल,

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:1
October 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

तार, शिक्षा से सम्बन्ध स्थापित हुआ। अतः उस युग में भारतीय समाज में अनेक क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। शिक्षा का प्रसार, सुधारवादी आन्दोलन, पाश्चात्य संस्कृति से सम्पर्क, औद्योगिक क्रांति आदि। ष्समाज में दो प्रकार की विचार धाराओं को व्याप्त करने वाले दो वर्ग बन गए थे, एक जो भारतीय प्राचीन वर्ण–व्यवस्था, जाति–व्यवस्था तथा सामाजिक बन्धनों को आवश्यक मानता था और दूसरा जो तन से भारतीय और मन से अंग्रेज था। इस तरह से दो पीढ़ियों की टकराहट भी इसी युग में व्याप्त थी। नई पीढ़ी के युवा परम्परागत मूल्यों और आदर्शों को भूलने लगे थे। परम्परागत वैवाहिक बन्धन अब ढीले पड़ने लगे थे और उसके स्थान पर प्रेम–विवाह और अन्तर्जातीय विवाह की शुरुआत हुई। समाज बुराइयों में बुरी तरह जकड़ा हुआ था। समाज में दहेज–प्रथा, विधवा–विवाह, अनमेल–विवाह, जाति–प्रथा, वेश्या समस्या आदि अनेक बुराइयाँ मुँह खोले हुए खड़ी थीं।

औद्योगिक क्रांति के कारण श्रमिक वर्ग की नवीन समस्या का सूत्रपात हुआ। उद्योग के आधार पर दो वर्ग बन गए पूंजीपति और श्रमिक। पूंजीपति अपने उद्योग में कार्यरत श्रमिकों का शोषण करता था। दूसरी तरफ श्रमिकों का घनत्व ज्यादा था और वे पूंजीपति को शोषणकर्ता तथा अपना जन्म–जन्म का शत्रु मानने लगे थे। इसके साथ–साथ किसान और जमींदार का संघर्ष भी खुलकर सामने आने लगा। इस प्रकार समाज में वर्ग–भेद उत्पन्न हो गया था। वर्ग–भेद का मुख्य कारण आर्थक था। ष्मनुष्य की आर्थिक असमानता ही मुख्य रूप से सामाजिक विभेद को प्रभावित करती है। यद्यपि यह पूर्णरूपेण उसका निर्धारण नहीं करती। यह आर्थिक असमानता मूलतः उस सम्बन्ध के अन्तर से उत्पन्न होती है, जो एक व्यक्ति या व्यक्ति–समुदाय का सम्पत्ति अथवा उत्पादन और वितरण के साधनों के साथ होता है। यदि एक व्यक्ति जमीन का मालिक है तो वह अपेक्षाकृत अधिक सामाजिक महत्त्व प्राप्त करने लगता है। परन्तु इसके विपरीत यदि वह केवल पराई जमीन पर खेती करने वाला है तो वह स्वयं को सामाजिक दृष्टि से अधोगत पाता है।ष

आर्थिक परिस्थिति

'अर्थ' के बिना कोई अर्थ ही नहीं होता है। जिस व्यक्ति के पास अर्थ नहीं, उसका जीवन ही अर्थहीन हो जाता है। व्यक्तिगत, सामाजिक, राष्ट्रीय सभी जीवन अर्थ पर आधारित होते हैं। ष्राष्ट्र का समग्र विकास अर्थ–व्यवस्था पर ही निर्भर करता है। जिस देश की अर्थ–व्यवस्था संतुलित होगी, वही राष्ट्र विकास के मार्ग पर अग्रसर मिलेगा। अतः सन्तुलित अर्थव्यवस्था राष्ट्रीय जीवन का प्रमुख आधार होती है। व्यक्ति के जीवन के समस्त क्रिया–व्यापारों को क्रियान्वयन करना समुचित अर्थ–व्यवस्था द्वारा ही सम्भव है। इसलिए वही राष्ट्र प्रगतिशील एवं आर्थिक रूप से सुदृढ़ होगा जो अपनी आर्थिक योजना को सुदृढ़ तरीके से लागू

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:1
October 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

करेगा। जिस प्रकार किसी समाज में किसी व्यक्ति के स्थान का निर्णय उसकी आर्थिक स्थिति से किया जाता है, उसी प्रकार अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र में किसी राष्ट्र की स्थिति उसके आर्थिक विकास पर निर्भर करती है। अर्थ सम्पन्न राष्ट्र से अपेक्षा की जाती है कि वह अपने व्यक्ति को केन्द्र में रखकर उसके लिए खुशहाली का रास्ता प्रशस्त करे। ष्जब तक देश में गरीब जनता को भरपेट भोजन, शरीर ढकने के लिए वस्त्र और आवास के लिए मकान नहीं मिलता, तब तक उनके जीवन में आशा और उल्लास की आशा करना निरर्थक है।

उपेन्द्रनाथ अश्क का व्यक्तित्व

साहित्यिक कृतियों में कृतिकार का व्यक्तित्व स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहता है। उपन्यास साहित्य की एक ऐसी विधा है जो समग्र जीवन की व्याख्या करती है। इसलिए उपन्यास में उपन्यासकार का व्यक्तित्व भी स्वयमेव समाहित हो जाता है। उसका यह व्यक्तित्व उसके विभिन्न क्रिया–कलापों, विचारों, प्रतिक्रियाओं, रुचियों और मानसिक प्रवृत्तियों के माध्यम से अभिव्यक्त होता है। अतः उपन्यासकार अश्क के उपन्यासों का समुचित अध्ययन विश्लेषण और मूल्यांकन करने के लिए उनके व्यक्तित्व पर दृष्टिपात करना अनिवार्य है।

'व्यक्तित्व' का विश्लेषण करने से पूर्व व्यक्तित्व की अर्थ व्याप्ति से परिचित होना भी आवश्यक है। षहिन्दी का व्यक्तित्व शब्द अंग्रेजी के 'पर्सनैलिटी शब्द का पर्यायवाची है। 'पर्सनैलिटी' से साधारणतया व्यक्ति के बाह्य आकार–प्रकार का अर्थ ग्रहण किया जाता है, क्योंकि 'पर्सनैलिटी' शब्द लैटिन भाषा के जिस श्पर्सीनाश शब्द से बना है, उसका प्रयोग अभिनेताओं के द्वारा लगाये जाने वाले चेहरों तथा उनकी वेशभूषा आदि के लिए होता रहा है।"

परन्तु आज 'पर्सनैलिटी' शब्द को स्थूल अर्थ में ग्रहण करना एकदम भ्रामक है, क्योंकि इसके अन्दर व्यक्ति के अन्तः और बाह्य दोनों प्रकार के गुण अथवा विशेषताएँ समाविष्ट होती हैं। हिन्दी में श्व्यक्तित्वश का शाब्दिक अर्थ है श्व्यक्ति की विशेषताश अर्थात् व्यक्ति का वह 'गुण–समुच्चय', जो उसे अन्य सामान्य लोगों से पृथक् करता हो। प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक रामकृष्ण टण्डन के अनुसार, ष्व्यक्तित्व किसी व्यक्ति के सम्पूर्ण मानसिक तथा शारीरिक योग्यताओं तथा विशेषताओं का वह समन्वय है, जिसमें दूसरों की अपेक्षा अपनी विशिष्ट भिन्नता होती है।

AIRO JOURNALS
Free / Unpaid
Peer Reviewed
Multidisciplinary
International
ISSN: 2320-3714
Volume:4 Issue:1
October 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

डॉ. रामशकल पाण्डेय ने व्यक्तित्व में निम्नलिखित तत्त्व माने हैं. शारीरिक गठन, रूप, बुद्धि, संवेगात्मकता, चरित्रबल और सामाजिकता। एन. एल. मन की मान्यता है– ष्व्यक्तित्व सामाजिक स्थितियों की संरचनाओं, व्यवहार के रूपों, रुचियों, मनोवृत्तियों, योग्यताओं, क्षमताओं और पात्रताओं का अनन्य संकलन है।

राबर्ट एस. वुडवर्थ के अनुसार– ष्व्यक्तित्व व्यक्ति के व्यवहार का समग्र गुण है जिसका प्रकाशन व्यक्ति के विचार और व्यवहार की विशिष्ट आदतों, उसकी मनोवृत्तियों और रुचियों, काम करने के उसके तरीके और जीवन के प्रति दार्शनिक दृष्टिकोण में हुआ करता है।

उपसंहार

अश्क' जी ने अपने उपन्यासों में नैतिकता तथा जीवन–मूल्यों को अत्यधिक महत्त्व दिया है क्योंकि वे मानते थे कि जाति या राष्ट्र का नैतिक पतन ही उसकी संस्कृति के पतन का प्रमुख कारण होता है। इसी कारण उन्होंने एक ओर अनैतिकता को प्रश्रय देने वाले तत्त्वों पर तीव्र व्यंग्य किया है तो दूसरी ओर नैतिकता और जीवन–मूल्यों की स्थापना, रक्षण एवं पोषण पर बल दिया है। अश्क जी के प्रथम उपन्यास से ही उनके नैतिकता सम्बन्धी विचार स्पष्ट हो जाते हैं। उपन्यास शसितारों के खेल' में कॉलेज में ष्वैवाहिक पद्धति पर पूर्वीय और पाश्चात्य दृष्टिकोण" पर वाद–विवाद प्रतियोगिता हो रही है। उपन्यास के मुख्य पात्र लता एवं जगत भारतीय संस्कृति के अनुसार नैतिकता की दृढ़ नींव पर स्थापित पुरातन वैवाहिक आदर्शों का समर्थन करते हैं। जगत मिस लता के विचारों का समर्थन करते हुए कहता है कि मिस लता ने इस समस्या का जो हल बताया है, वही ठीक है, बल्कि इस सामाजिक समस्या का एकमात्र हल वही है। यदि हम पश्चिम की अंधाधुंध नकल करेंगे तो वह हमें नैतिक पतन की ओर ले जाएगी। इसी प्रकार उपन्यास 'बड़ी–बड़ी आँखें' में नायक संगीत में नैतिक चेतना एवं अपने प्रति ईमानदार बने रहने की भावना बड़ी ही जागरूक है। यहाँ तक कि वह मौत की घड़ियाँ गिन रही बीमार पत्नी को तसल्ली देने के लिए सत्य को छोड़कर असत्य को नहीं अपनाता। इसी प्रकार यदि हम सृष्टि के मूल तत्त्व प्रेम की बात करें तो इसके लिए हमें अश्क जी की भूरी–भूरी प्रशंसा करनी होगी कि उन्होंने वाणी जैसा चरित्र अपने उपन्यास में गढ़ा। उपन्यास 'बड़ी–बड़ी आँखें में संगीत वाणी के प्रेम को अनुभव करता रहता है। वाणी की श्रद्धा और प्रेम से भरी बड़ी–बड़ी आँखें संगीत को सदा शक्ति प्रदान करती रहती हैं।

संदर्भ

1. त्रिलोकी तुलसी, अश्क रू एक रंगीन व्यक्तित्व, पृ. 45

ISSN: 2320-3714
Volume: 4 Issue: 1
October 2021
Impact Factor: 6.3
Subject: Humanities

2. अश्क, बोल, किण बलदेव की जय, ज्यादा अपनी रू कम परायी, पृ. 164
3. डॉ. रामदरश मिश्र, हिन्दी–उपन्यास, पृ. 42
4. अश्क, ज्यादा अपनी रू कम पराई, पृ. 93
5. डॉ. गोपाल राय, अज्ञेय और उनके उपन्यास, पृ. 22–23
6. डॉ. प्रभुलाल डी. वैश्य, डॉ. रांगेय राघव के उपन्यासों में युगचेतना, पृ. 41
7. रमेशचन्द्र मजूमदार, भारत का बृहत इतिहास, पृ. 20
8. डॉ. बी. बी. मिश्र, इण्डियन मिडल क्लासेज, पृ. 2
9. उद्धृत डॉ. केशव देव शर्मा, आधुनिक हिन्दी उपन्यास और वर्ग–संघर्ष, पृ. 5
10. सम्पा. कौशल्या अश्क, अश्क एक रंगीन व्यक्तित्व (लेखक– राजेन्द्र यादव), पृ. 67

*****